

समाज विकासमाला

ऐसे थे सरदार

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १३

ऐसे थे सरदार

सरदार पटेल के जीवन की कुछ रोचक घटनाएं

लेखक
विष्णु प्रभाकर

संपादक
यशपाल जैन

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

पांचवीं बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
युगांतर प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने ग्राज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों ग्रादमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ग्रोर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही ग्रासान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार ग्रौर बोलचाल की हो ग्रौर जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकीं हैं। इन सबकी भाषा बड़ी ग्रासान है। विषयों का चुनाव बड़ो सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय ग्रौर छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

पांचवां संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का पांचवां संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद ग्रा रही हैं, इससे हमें बड़ा ग्रानंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक ग्रौर उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे ग्रौर इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

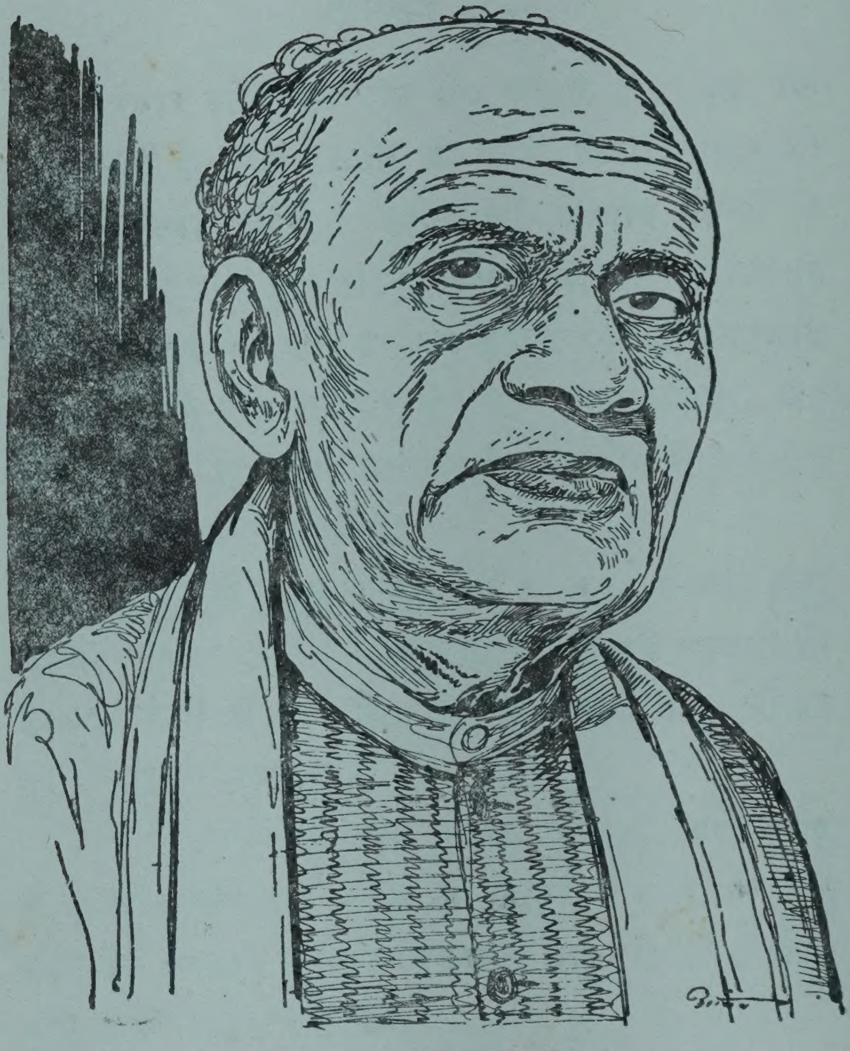
पाठकों से

सरदार पटेल का नाम सब जानते हैं। इस देश की भलाई के लिए उन्होंने जो काम किया, वह भी किसीसे छिपा नहीं है। भारत को आजाद करने के लिए लड़ाई शुरू हुई तो वह अपनी बैरिस्टरी छोड़कर मैदान में कूद पड़े और बराबर जूझते रहे। देश आजाद हुआ। उसके बाद सरदार ने जो काम किया, वह दुनिया के इतिहास में अनोखा है। उन्होंने बिखरे देश को एक सूत में पिरो दिया।

सरदार में बहुत-से गुण थे। वह डरना नहीं जानते थे और सही बात के लिए बड़े-से-बड़े आदमी का सामना करने में नहीं झिझकते थे। उनकी बहा ुरी का तो कहना ही क्या था!

उनके जीवन की कुछ रोचक घटनाएं कई जगह से इकट्ठी करके इस पुस्तक में दी गई हैं। आप इन्हें पढ़ें और सरदार की-सी निडरता, बहादुरी और मजबूती अपने अंदर पैदा करें।

—संपादक



सरदार वल्लभभाई पटेल

ऐसे थे सरदार

: १ :

बड़ौदा स्कूल की बात है। एक बार हिसाब के अध्यापक बीज-गणित पढ़ा रहे थे। पढ़ाते-पढ़ाते अटक गए। एक सवाल हल नहीं हो रहा था। बहुत देर तक सोचते रहे, पर कुछ समझ में नहीं आया। सरदार देख रहे थे। वह उठ खड़े हुए। बोले, "आप यह सवाल हल नहीं कर सकते।"

अध्यापक को बड़ा बुरा लगा। चिढ़कर बोले, "भाई, मैं नहीं कर सकता तो तुम कर दो। तुम अध्यापक बन जाओ।"

सरदार मानो तैयार ही बैठे थे। सुनते ही बोर्ड के पास पहुंचे और झट सवाल हल कर दिया। करने के बाद अपनी जगह नहीं लौटे। वहीं अध्यापक की कुर्सी पर बैठ गए।

यह देखकर अध्यापक और विद्यार्थी सब हैरान रह गए। अध्यापक ने इसे अपना अपमान समझा, लेकिन वह कह क्या सकते थे। उन्होंने तो सरदार को

बुलाया था। बेबस होकर उन्होंने हैडमास्टर से शिकायत की। हैडमास्टर को भी यह बात बुरी लगी। उन्होंने सरदार को बुलाया। पूछा, "क्या यह ठीक है ?"

सरदार बोले, "जी हां।"

"तुमने ऐसा क्यों किया ?"

सरदार ने सारी बात सही-सही कह सुनाई। लेकिन हैडमास्टर की समझ में नहीं आई। एक विद्यार्थी अध्यापक की कुर्सी पर नहीं बैठ सकता। यह उनका अपमान है। लेकिन करते क्या! बात अध्यापक ने ही कही थी। उन्होंने सरदार से कहा, "इस बार माफ किया जाता है। आगे से ऐसा करोगे तो स्कूल से निकाल दिये जाओगे।"

सरदार ने तुरंत जवाब दिया, "जहां ऐसे अध्यापक हैं, वहां मैं स्वयं ही पढ़ना नहीं चाहता। मैं आज ही चला जाऊंगा।"

और उन्होंने उसी दिन से वह स्कूल छोड़ दिया।

: २ :

एक बार सरदार पटेल की बगल में फोड़ा निकल आया था। उस समय वह वकालत पढ़ रहे थे। बड़ी दवा-दारू की गई। जिसने जो बताया वही लगाया, लेकिन कुछ लाभ न हुआ। तकलीफ बराबर बढ़ती

गई। एक दिन किसीने एक देहाती नाई का पता बताया। घरवालों ने तुरंत उसे बुलाया। उसने आकर फोड़े को देखा। बोला, "इसका तो अब एक ही इलाज है।"

घरवालों ने पूछा, "क्या ?"

नाई ने झिझकते हुए कहा, "इलाज कुछ खतरनाक है।"

"लेकिन बताइये तो।"

नाई ने जवाब दिया, "लोहे को गरम करके फोड़े को दागना होगा।"

सुनकर घरवालों का दिल कांप उठा। फोड़े को गरम लोहे से दागना सचमुच खतरनाक काम था। जरा हाथ कांप जाय तो ?...लोहा इधर-उधर लग जाय तो ?...यही सोचकर सब डर रहे थे। लेकिन सरदार जरा भी नही डरे। बड़ी खुशी से उसके लिए तैयार हो गये।

आखिर लोहा गरम किया। गरम होकर आग की तरह लाल हो उठा। उसे देखकर घरवाले घबरा गये। उन्हें हिम्मत न हुई, यहांतक कि नाई महाराज भी कांप उठे। वह दागने में हिचकिचाने लगे। सरदार ने उसकी हिचकिचाहट को देखा। फिर कड़ककर कहा, "देर

क्यों करते हो ? लोहा ठंडा हुआ जा रहा है।" नाई ने साहस करके लोहा फोड़े से लगा दिया। फोड़ा फूट गया, पर भीतर का सारा पीप न निकल सका। सरदार ने कहा, "झिझकते क्यों हो ? निकालो न !"

नाई ने कहना चाहा, "बात यह है...।"

सरदार बीच ही में बोल उठे, "अगर तुमसे



नाई ने साहस करके तपता लोहा फोड़े से लगा दिया

नहीं हो सकता तो लाओ, मुझे दो। मैं अपने हाथ से निकाल लूंगा।" यह कहकर उन्होंने लोहे की

दहकती हुई सलाख अपने हाथ में ले ली। उसे चारों तरफ घुमाया। सारा पीप बाहर आ गया।

सरदार के इस साहस के सामने सबको सिर झुकाना पड़ा।

: ३ :

सरदार बोरसद में वकालत करते थे। वकीलों के कमरे का एक दरवाजा अदालत में खुलता था। वकील लोग उसी दरवाजे से अदालत में आते-जाते थे। एक दिन मुंसिफ साहब ने वह दरवाजा बंद करवा दिया। उन्होंने कहा, "बार-बार आने-जाने से काम में खलल पड़ता है।"

दरवाजा बंद होने से वकीलों की कठिनाई बढ़ गई। आने-जाने में देर होने लगी। अदालत में कब किस वकील की जरूरत होगी, यह जानना भी कठिन हो गया। यह देखकर वे सब मुंसिफ़ के पास गये। उनको अपनी कठिनाई बताई और कहा कि दरवाजा खोल दें, लेकिन मुंसिफ़ नहीं माने।

सरदार उस समय अधिकतर फौजदारी अदालत में काम करते थे। यह घटना थी दीवानी अदालत की। महीने-डेढ़ महीने में वह कभी इधर आते थे। अगली बार आने पर उनको इसका पता चला तो उन्होंने सब

वकीलों को इकट्ठा किया। बोले, "मुंसिफ़साहब से कह दो कि दरवाजा खोल दें, नहीं तो हम हड़ताल कर देंगे।"

वकीलों ने यह सलाह मान ली। मुंसिफ़ को मालूम हुआ तो वह चौंके। पर एकाएक झुकते कैसे? होते-होते बात खेड़ा जिले के जज के पास पहुंची। उन्होंने मुंसिफ़ को बुलाया और कहा, "इस झगड़े को जल्दी निबटाओ।"

अब तो मुंसिफ़ घबरा उठे। उन्होंने एक परिचित वकील को बुलाया और समझौता करा देने की बात कही। वह सरदार के पास आये। समझौते की चर्चा की और कहा, "मुंसिफ़साहब आपको बंगले पर बुलाते हैं।"

सरदार ने जवाब दिया, "मैं नहीं जाऊंगा। जिसे गरज हो वह मेरे पास आवे।"

वकील ने यही बात मुंसिफ़ से कह दी। उन्हें बड़ा अचरज हुआ। वह ठहरे मुंसिफ़! वकील के पास कैसे जाते? उनकी हेठी होती; लेकिन समझौता भी करना जरूरी था। बेचारे ने फिर कहलवाया, "आप और दूसरे वकील सब मेरे घर आकर जल-पान करें मैं समझौता करना चाहता हूं।"

सरदार फिर भी नहीं पसीजे। उन्होंने कहा, "मैं आ सकता हूं, लेकिन मुंसिफ़साहब को सबके सामने अफसोस जाहिर करना होगा।"

बेचारा मुंसिफ़! उसने ऐसे वकील कहां देखे थे! उसे झुकना पड़ा। उसने माफी मांगी। सबको चाय पिलाई और दरवाजा खोल दिया।

: ४ :

सरदार बड़ौदा के सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। उनको संस्कृत कठिन मालूम पड़ती थी। इसलिए उन्होंने गुजराती ले ली। उस समय गुजराती छोटेलाल मास्टर पढ़ाते थे। जो देवभाषा छोड़कर गुजराती सीखने आता उससे उनको अरुचि थी। सरदार जब उनके पास गये तो वह बोले, "आइये महापुरुष, कहां से पधारे? देवभाषा छोड़कर गुजराती ली है। लेकिन जानते हो, देवभाषा सीखे बिना गुजराती नहीं आती?"

यह कहकर उन्होंने देवभाषा के बहुत-से लाभ गिना दिये।

सरदार बोले, "आपकी बात ठीक है, लेकिन साहब, हम सब देवभाषा पढ़ें तो आप फिर किसे पढ़ावेंगे?"

जवाब तेज था। सुनकर मास्टरसाहब बिगड़

गये। बोले, "आप जाइये। एक से दस तक के पहाड़े लिखकर लाइये।"

सरदार ने सुन लिया। एक दिन बीता, दो दिन बीते, पर उन्होंने पहाड़े नहीं लिखे। मास्टरसाहब रोज नाराज होते। रोज सजा बढ़ा देते। बढ़ते-बढ़ते सजा दो सौ पहाड़े लिखने तक पहुंच गई, लेकिन सरदार पर उसका कोई असर न हुआ। वह चुपचाप सजा सुन लेते। आखिर एक दिन मास्टर बहुत बिगड़े। बोले, "लिखकर लाओगे या दूसरी सजा देनी पड़ेगी?"

सरदार ने जवाब दिया, "साहब, दो सौ पाड़े[1] लाया तो था।"

"तो?"

"तो क्या, उनमें एक मरखना था। उसके कारण सब बिदककर भाग गये। एक भी नहीं बचा।"

बड़ा अनोखा मजाक था। ऐसा मजाक कहने के लिए पूरा साहस चाहिए। उसे सहने को भी बड़ा दिल चाहिए। मास्टरसाहब के पास वह दिल न था। धमका-कर उन्होंने कहा, "जाओ, कल सब पहाड़े लिखकर लाओ।"

---

[1] गुजराती में पहाड़े को पाड़े कहते हैं। पाड़े का दूसरा मतलब होता है भैंस का बच्चा।

अगले दिन आने पर पूछा, "लिखकर लाये ?"

"जी हां ।" सरदार ने कहा और एक कागज दिखा दिया । उसपर लिखा था—"दो सौ पहाड़े ।" मास्टर यह देखकर तिलमिला उठे । विनोद की भी एक हद होती है ! फिर भी उन्होंने सरदार को पीटा नहीं । हैडमास्टर के पास भेज दिया । हैडमास्टर ने उनसे सारी बात पूछी । सरदार ने पूरी कहानी सुना दी और कहा, "यह कैसी सजा है ! मेरी पढ़ाई में से कुछ लिखवाते । मुझे लाभ होता । पहाड़े लिखने से कोई लाभ नहीं हो सकता, उल्टे सब मुझे मूरख कहेंगे ।"

हैडमास्टर सब समझ गए । उन्होंने सरदार को कोई सजा न दी । शांति से समझाकर छोड़ दिया ।

: ५ :

सरदार के एक परिचित भाई रेलवे पुलिस में थानेदार थे । उनकी अपने अफसर से नहीं बनती थी । अफसर थे अंग्रेज । उनके भाई सरकार में बड़े ऊंचे पद पर थे । मौका पाकर उस अफसर ने एक दिन थानेदार को फांस लिया । उनपर एक रुपये की लकड़ी की चोरी का इल्जाम लगाया । उन दिनों रेलवे में चोरी-डाके बहुत पड़ते थे । इसलिए यह छोटा-सा मामला बड़ी आसानी से बड़ा बन गया । इसकी जांच के लिए खास

अदालत बनी। पैरवी के लिए अहमदाबाद के सरकारी वकील आये। अदालत में जाने से पहले सारी जांच खुद उस अफसर ने की। वह एक बात खास तौर पर जानना चाहता था—क्या थानेदार को पहले भी कभी सजा हुई थी ?

उन भाई ने सारा मामला सरदार को सौंप दिया। इन्हें भी इस बात का पता लगा। इनकी सलाह से थानेदार अपने-आप अंग्रेज अफ़सर के पास गया। उसने कहा, "आप बेकार मेहनत कर रहे हैं। मुझे पहले सजा हो चुकी है।"

अफसर को अचरच भी हुआ, खुशी भी। पूछा, "कितनी सजा हुई ?"

"नौ महीने की। एकदम अकेले में रखा गया था।"

"हूं ! कब की बात है ?"

"बहुत पुरानी। कोई तीसेक साल पहले की।"

अफसर तो यही चाहता था। उसने सब बातें लिख लीं और मुकदमा अदालत में भेज दिया। मामला पेश हुआ तो सरदार एकाएक बीमार पड़ गये। उनकी जगह सरदारके बड़े भाई विट्ठलभाई पटेल पैरवी करने लगे। वह थे लड़ाकू। सरकारी वकील से लड़ पड़े। इसका फल बुरा हुआ। थानेदार को छः महीने की सजा हो गई।

सरदार ने सुना तो घबराये नहीं। उन्होंने बड़ी अदालत में अपील कराई। उधर थानेदार को जमानत पर छुड़ाने की कोशिश की। एक बड़े बैरिस्टर पैरवी करने को बुलाये। सरकार ने इस बात का कड़ा विरोध किया। अरजी नामंज़ूर हो गई। तब सरदार ने अपील की सुनवाई तुरंत करने की मांग की।

आखिर अपील की पेशी हुई। सरकारी वकील वहां बहुत गरजे। कहा, "ऐसे मामले बड़ी कठिनाई से पकड़े जाते हैं। फिर अपराधी पुलिस का अफसर है। यह कितनी भयानक बात है। बाड़ ही खेत को खा रही है।"

सफाई के बैरिस्टर बोले, "पहले अपराध साबित कीजिये, तब सोचिये कि अपराधी कौन है। उससे पहले इस बात पर विचार नहीं किया जा सकता।"

जज का मन डांवाडोल होने लगा। वह सहसा कुछ फैसला न कर पाये। तभी सरकारी वकील ने कहा, "अपराधी को पहले भी सजा हो चुकी है। इस बात पर भी आप विचार कीजिये।"

यह सुनकर सफाई के बैरिस्टर ठगे-से देखते रह गये। जज ने उनसे इस बात का जवाब मांगा। वह क्या कहते! सरदार पर बिगड़ पड़े। बोले, "मुझे पहले

क्यों नहीं बताया ? मैं कभी अपील करने की सलाह न देता ।"

वह मुकदमा छोड़कर बैठ गये । एक अजीब हालत पैदा हो गई। अदालत खचाखच भरी हुई थी। सरदार के कारण लोगों को बड़ी दिलचस्पी थी । फिर मामला एक अंग्रेज अफसर और एक देशी साहब के बीच का था । सब सोच रहे थे कि देखें, आगे क्या होता है ! बचने की कोई राह नहीं दिखाई देती । तभी सरदार उठे । उन्होंने अदालत से कहा, "मुजरिम को पहले सजा होने का सबूत दिखाया जाय ।"

जज ने बात मान ली । इसपर सरकारी वकील भभक उठे । बोले, "मुजरिम ने सबकुछ खुद ही कबूल किया है । अब आप और क्या सबूत चाहते हैं ?"

सरदार ने कोई जवाब नहीं दिया । चुपचाप वह बयान पढ़ लिया । पढ़ चुके तो बोले, "साहब, इसमें लिखा है कि मुजरिम को नौ महीने की सजा हुई थी ।"

सरकारी वकील ने कहा, "जी हां !"

"उसे एकदम अकेले में रखा गया था ।"

"बेशक ! उसका अपराध संगीन रहा होगा ।"

"मुजरिम को यह सजा तीस साल पहले हुई थी ।"

"जी हां, सब लिखा तो है।" सरकारी वकील ने बेताब होकर कहा।

"जी हां, मैं लिखा हुआ ही पढ़ रहा हूं।" सरदार बोले, "इसमें यह भी लिखा है कि मुजरिम की उमर अब तीस साल की है।"

सरदार की बात सुनकर सब चौंक पड़े। तीस साल के आदमी को तीस साल पहले नौ महीने की सजा!...सो भी अकेले में!...

अब कुछ समझना बाकी न रहा। अदालत हँसी से गूंज उठी। सरकारी वकील पीले पड़ गए। फिर सरदार ने जो बहस की, वह शानदार थी। अंग्रेज अफ़सर कितना चतुर था, सरकारी वकील की दलीलें कितनी तेज थीं, सबकी सरदार ने पोल खोल दी। मुकदमा ढीला पड़ गया। जज ने थानेदार को बेकसूर बताकर छोड़ दिया। हां, अंग्रेज अफसर की खासी आलोचना की। बेचारे को आखिर में नौकरी छोड़नी पड़ी।

: ६ :

सन् १९०८ की बात है। एकाएक सरदार की पत्नी झवेरबा बीमार पड़ गईं। आंतों का रोग था। विट्ठल-भाई उनको इलाज के लिए बंबई ले गये। डाक्टरों

ने देखकर बताया, "आपरेशन करना होगा।" इसके लिए उन्हें कामा-अस्पताल में भरती करा दिया गया। सरदार उनसे मिलने गये। डाक्टर से बातें कीं। उसने कहा, "आपरेशन पंद्रह दिन बाद करेंगे। तबतक इनकी तबियत कुछ सुधर जायगी।

सरदार बोले, "ठीक है। लेकिन आपरेशन के दिन मुझे बुला लेना।"

कहकर सरदार आनंद चले गए। वहां उनको एक बड़े मुक़दमे की पैरवी करनी थी। उनके जाने के बाद डाक्टर का विचार एकाएक बदल गया। उसे एकदम आपरेशन करने की जरूरत पड़ी। सरदार को खबर नहीं दी जा सकती थी। डाक्टर ने आपरेशन किया। बाद में सरदार को तार से सूचना मिली—

"आपरेशन ठीक हो गया।"

लेकिन भगवान की मरजी! दूसरे दिन अचानक हालत बिगड़ गई। सरदार को दूसरा तार मिला। उसमें झवेरबा के गुजर जाने की खबर थी। सरदार उस समय अदालत में बहस कर रहे थे। हत्या का मुकदमा था। उस दिन बहस पूरी होनी थी। न होने पर मामला बिगड़ने का डर था। मुजरिम को फांसी हो सकती थी। एक ओर पत्नी की मौत की भयंकर

पोड़ा, दूसरी ग्रोर ग्रपना कर्त्तव्य। सरदार कसौटी पर थे। लेकिन वह जरा भी नहीं भिझके। तार को जेब में रख लिया, जैसे कुछ हुग्रा हो न हो। जी कड़ा कर बहस पूरी कर ली, तब तार की बात लोगों को बताई।

सुनकर सबने दांतों तले ग्रंगुली दाबी। तब कुल तेंतीस साल की उमर थी उनकी। पत्नी से ग्राखिरी बार मिल भी न सके।

: ७ :

बड़े भाई के लौट ग्राने के बाद सरदार विलायत गए। वहां वह एक मकान-मालकिन के यहां रहते थे। एक दिन नहाते समय वह गश खाकर गिर पड़े। बाद में जोर का बुखार चढ़ा। पता लगा, पैर में नहरुग्रा हो गया है। उसका ग्रापरेशन होना जरूरी था। वह एक ग्रस्पताल में दाखिल हो गये। पहली बार ग्रापरेशन सफल नहीं हुग्रा। डाक्टर को इस बीमारी का पता नहीं था। ग्रापरेशन फिर किया गया। इस बार ग्रौर भी गड़बड़ हो गई। उनको धनुर्वात हो गया। डाक्टर ने कहा, "जान बचानी है तो एकदम पैर काटना होगा।"

सरदार को यह बात नहीं जंची। लंगड़े होकर देश लौटने की बात उनको बुरी लगी। उन्होंने उस डाक्टर

को छोड़ दिया। नये डाक्टर से जांच कराई। वह बोले, "पैर ठीक हो सकता है। आपरेशन फिर करना होगा।"

सरदार ने कहा, "तो कर डालिये।"

डाक्टर फिर बोले, "एक बात है। अगर आप बेहोशी की दवा न सूंघें तो ठीक रहे।"

सरदार ने तुरंत जवाब दिया, "मुझे बेहोशी की



"चाहे कितनी पीड़ा हो, मैं सब सह सकता हूं।"

दवा नहीं चाहिए। चाहे जितनी पीड़ा हो, मैं सब सह सकता हूं।"

ऐसा ही हुआ। आपरेशन पूरा होने तक सरदार

ने एक बार भी आह नहीं भरी। देखनेवाले हैरान रह गये। डाक्टर ने कहा, "ऐसा बीमार पहली बार देखा है।" सरदार का पैर ठीक हो गया।

: ८ :

विट्ठलभाई पटेल भारतीय धारासभा के पहले गैर-सरकारी प्रेसिडेंट थे। वहां उन्होंने बड़ी शान से काम किया। भारत का मान बढ़ाया। इसलिए उनका नाम प्रेसिडेंट पटेल मशहूर हो गया। वह सरदार पटेल के बड़े भाई थे। पर दोनों में गहरा मतभेद था। दोनों राजनीति के मैदान में खूब लड़ते थे, लेकिन घर पर भाई-भाई थे। एक-दूसरे का खूब आदर करते थे। सरदार का प्रेम था कि क्या कहना! सरदार पटेल ने बैरिस्टर बनने के लिए विलायत जाने का इंतजाम किया। बड़े भाई को अचानक पता लग गया। कहने लगे, "मुझे हो आने दो। मेरा आखिरी साल है।" सरदार ने चुपचाप अपनी जगह उनको जाने दिया। इस तरह सरदार हमेशा बड़े भइया का आदर करते थे। बड़े भइया सरदार के पास आकर ठहरते। सरदार उनका बिस्तर तक खुद बिछा देते। बड़े पटेल जितने लड़ाकू थे, उतने ही मजाकिया भी थे। कभी-कभी बड़े भयानक मजाक करते। लोग उनके

बैरी तक बन जाते। एक बार वह सरदार के पास ठहरे हुए थे। कुछ मित्र मिलने आ गये। बातें चल पड़ीं। इसी बीच सरदार पाखाने चले गये। बड़े पटेल ने देखा, चुपचाप उठे और बाहर से पाखाने की सांकल लगा दी। फिर मित्रों से बोले, "यह हैं आप लोगों के सरदार। स्वराज मांगते हैं। पाखाने की सांकल खोलकर बाहर आ जायं तो जानें।

आधा घंटा बीत गया। बड़े पटेल मित्रों से बातें करते रहे। सरदार भीतर बैठे रहे। एक बार सांकल खटखटाई तक नहीं। आखिर बड़े पटेल उठे और चुपचाप सांकल खोल आये। सरदार उसी तरह चुपचाप बाहर आये और काम में लग गये, जैसे कुछ हुआ ही न हो!

: ९ :

जुलाई सन् १९२७ में गुजरात में बड़ा भयानक तूफान आया। अपनी याद में लोगों ने आंधी-पानी का ऐसा कोप नहीं देखा था। जल-थल एक हो गये। छः दिन तक पानी की झड़ी रुकी नहीं। सातवें दिन तो हवा भी नाच उठी। अब लोग डर गये। उस रात सरदार के मन में भी परेशानी होने लगी। वह सो न सके। रात को बारह बजे घर से बाहर निकल पड़े।

अंधेरी रात थी। हाथ को हाथ नहीं सूझता था। बादल गरज रहे थे। मूसलाधार मेह बरस रहा था। आंधी सायं-सायं चल रही थी। ऐसे समय सरदार अकेले बढ़े चले जा रहे थे। कभी सड़क की टिमटिमाती बत्तियों में कुछ दिखाई दे जाता था। कभी बिजली चमक उठती थी।

इतने में हरिलाल कापड़िया का घर आ गया। वह बहादुर और साहसी थे। सरदार ने उनका दरवाजा



मूसलाधार मेंह और आंधी में आधी रात कापड़िया के दरवाजे पर पहुंचे

खटखटाया। वह सरदार का देखकर चौंक उठे। वहां

चाय पी और कपड़े बदलकर सरदार बोले, "चलो मेरे साथ। शहर की हालत देखनी है।"

कापड़िया के मकान की दीवार गिरनेवाली थी। सब डर रहे थे। फिर भी वह सरदार के साथ चल पड़े। दोनों सवेरा होने तक उस तूफान में घूमते रहे। पानी कहां-कहां अधिक भर गया है, कहां-कहां तोड़-फोड़ करनी होगी, पहले यह सब देखकर फिर दोनों कमेटी के इंजीनियर के घर आये। उसे जगाया। जमादारों और मजदूरों को जमा किया। पानी कहां-कहां से निकाला जा सकता है, इसकी चर्चा की और सब काम पर जुट गए। चार दिन तक सरदार और इंजीनियर ने दिन-रात एक कर दिया। उनके कपड़े पानी से तर रहते थे। हवा उनको थपेड़े मारती थी, पर वह बिना रुके पानी के लिए राह बनाते रहे। उनको काम करते देख मजदूरों ने भी जी-तोड़ मेहनत की।

आखिर पानी निकल गया। न निकला होता तो अहमदाबाद की क्या दशा होती, कौन कह सकता है।

: १० :

बारडोली की अनोखी लड़ाई का नाम कौन नहीं जानता? इसी लड़ाई में भारत ने अपने सरदार को पाया था। इसी लड़ाई में सरदार की संगठन-शक्ति

सामने आई थी। इसी लड़ाई में अनपढ़ किसानों ने दिल दहलानेवाले बलिदान किये। उन बलिदानों को देखकर गोरी ताकत हिल गई।

सरकार ने जनता को सताने में कुछ न उठा रखा। औरतों को भी न छोड़ा। घर-बार लूटे, आग लगाई, नीलाम बोले, पर जनता अडिग रही। सरदार का शासन ही ऐसा था। सरकार का जब किसी तरह बस न चला तो वह बौखला गई। उसने भैंसों तक को जेल में डाल दिया। अजीब-अजीब हुक्म जारी किये। एक में कहा, "आम रास्तों के पास या गलियों में सार्वजनिक जगहों पर ढोल वगैरा बजाना अपराध माना जायगा।" सरदार ने इसका खूब मजाक उड़ाया। बोले, "गोले-बारूदवाली सरकार ढोल-नगाड़ों से डर गई। अब ढोल बजाना बंद कर दो। ऐसे हुक्म निकालकर सरकार हमें फंसाना चाहती है। हमें जागते रहना चाहिए। हमें ढोल-नगाड़ों से कोई मतलब नहीं। हमें तो लोगों से लगान न देने को कहना है।"

एक दिन सरदार वालोड की सभा में यही बात समझा रहे थे। सभा थाने के सामने हो रही थी। थाने में भैंसें कैद थीं। सरदार का भाषण पूरा हुआ तो भैंस चिल्लाने लगीं। सरदार बोल उठे, "सुनो, इन भैंसों

को चीख। रिपोर्टरो, रिपोर्ट करो कि वालोड के थाने में भैंसें भाषण दे रही हैं। हमारे ढोल-नगाड़ों से यह सरकार उलट रही है। अब इन भैंसों की आवाज सुनो। ये भैंसें पुकार-पुकारकर कह रही हैं कि इस राज में से इंसाफ मुंह छिपाकर भाग गया है।"

जेल के अंधेरे में रहते-रहते भैंसें कुछ सफेद पड़ गई थीं। उनको देखकर सरदार ने कहा, "यह तो मड़ामड़ी बन गईं, यानी गोरों की जेल में रहते-रहते काली भैंसें भी गोरी मेम जैसी बन गईं!"

: ११ :

सरदार के विनोद से कोई नहीं बचता था, गांधीजी भी नहीं। यरवडा-जेल में वे दोनों साथ रहे। वहां दोनों का खूब जोरों का मजाक चलता था। ६ अप्रैल से सत्याग्रह-सप्ताह शुरू होता है। १९३२ की ५ अप्रैल की बात है वह और महादेवभाई यरवडा-जेल में थे। अगले दिन पिंजाई शुरू करने की बात थी। महादेवभाई ने गांधीजी से पूछा, "पोजन की तांत कैसी है? आपसे कितनी बार टूटी थी?"

बापू बोले, "जतन करना आता हो तो कुछ भी न टूटे। शंकरलाल ने मुझसे ली कि टूटी। काका ने ली कि टूटी। लेकिन मेरी तो कई दिन चलती रहती है।"

फिर कहा, "देखो तो यह मेरा लंगोट है। इसे संभाल-संभालकर पहनता हूं। और किसीके पास होता तो कभी का फट जाता।"

सरदार सुन रहे थे। बोल उठे, "यह तो ऐसा लगता है जैसे पहनते हो न हों। बस, खूंटी पर संभालकर टांग छोड़ा हो।"

: १२ :

बापू सुबह-शाम नीबू पीते थे। नीबू गरमी में महंगे हो जाते थे। इसलिए बापू ने इमली पीने का सुझाव रखा। जेल में उसके पेड़ भी बहुत थे।

सरदार ने सुना तो बहुत हंसे। बोले, "इमली में बादी होती है, उसके पानी से हाड़ गल जाते हैं।"

गांधीजी ने कहा, "लेकिन जमनालालजी पीते हैं।"

सरदार ने तुरंत जवाब दिया, "जमनालालजी के हाड़ तक पहुंचने का इमली के लिए रास्ता ही नहीं है।"

: १३ :

जनवरी १६४१ में सरदार यरवडा-जेल में थे। वहां एक दिन जेलर ने सूचना दी, "आज रात को मच्छरदानियां नहीं मिलेंगी। वे फट गई हैं।"

सुनकर सरदार बोले, "फट गई हैं तो बाजार जाओ और नई खरीदकर लाओ।"

जेलर ने जवाब दिया, "नई मच्छरदानियां मंगाई हैं, पर अभी आई नहीं।"

सरदार उछल पड़े, "तो जेल सुपरिंटेंडेंट के पास जाओ। उससे कहो कि मैं यहां अपने-आप नहीं आया। वही लाया है। यदि वह मच्छरदानियों का इंतजाम नहीं कर सकता तो जेल का दरवाजा खोल दे, मैं चला जाऊंगा। जब मच्छरदानियां आ जायंगी तो मैं भी लौट आऊंगा।"

फिर अपने साथियों की ओर मुड़कर कहा, "यदि उसके पास मच्छरदानियां नहीं हैं तो उसने हमें यहां क्यों रखा है ?"

यह सुनकर जेलर कांप उठा। वह भागा हुआ सुपरिंटेंडेंट के पास गया। सब कहानी सुनाई।

एक घंटे में मच्छरदानियां आ गईं।

'मंडल' के प्राप्य कुछ प्रकाशन

आत्मकथा	(गांधीजी)	४·००
आत्मकथा	"	२·००
प्रार्थना-प्रवचन (२ भाग)	"	५·५०
गीता-माता	"	४·००
पंद्रह अगस्त के बाद	"	१·५०, २·००
द. अफ्रीका का सत्याग्रह	(गांधीजी)	३·५०
मेरे समकालीन	"	५·००
आत्म-संयम	"	३·००
गीता-बोध	"	०·५०
अनासक्तियोग	"	१·५०
ग्राम-सेवा	"	०·३७
मंगल-प्रभात	"	०·३७
सर्वोदय	"	०·३७
नीति-धर्म	"	०·३७
आश्रमवासियों से	"	०·३७
हमारी मांग	"	१·००
सत्यवीर की कथा	"	०·२५
संक्षिप्त आत्मकथा	"	१·००, १·५०
हिंद-स्वराज्य	"	०·७५
अनीति की राह पर	"	१·००
बापू की सीख	"	०·५०
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)		१·१२
आज का विचार (दो भाग)		०·७५
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	"	१·७५
गांधीजी ने कहा था (६ भाग)		२·२५
शांति-यात्रा	(विनोबा)	१·५०
विनोबा के विचार (२ भाग)		३·००
जीवन और शिक्षण	(विनोबा)	२·००
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	"	१·००
ईशावास्यवृत्ति	"	०·७५
ईशावास्योपनिषद्	"	०·१२
सर्वोदय-विचार	"	१·१२
स्वराज्य-शास्त्र	"	०·५०
गांधीजी को श्रद्धांजलि	"	०·३७
राजघाट की संनिधि में	"	०·६२

भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	०·२५
विचार-पोथी	"	१·००
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	"	०·२५
जमाने की मांग	"	०·२५
उपनिषदों का अध्ययन	"	१·००
मेरी कहानी	(नेहरू)	८·००
मेरी कहानी (संक्षिप्त)	"	२·५०
हिंदुस्तान की समस्याएं	"	२·००
लड़खड़ाती दुनिया	"	२·००
राष्ट्रपिता	"	२·००
राजनीति से दूर	"	२·००
हमारी समस्याएं	"	०·७५
सं० हिंदुस्तान की कहानी		२·५०
नया भारत	"	०·२५
आजादी के आठ साल	"	०·२५
आत्मकथा	(राजेंद्र प्रसाद)	८·००
गांधीजी की देन	"	१·५०
गांधी-मार्ग	"	०·१२
महाभारत-कथा	(राजाजी)	५·००
कुब्जा-सुंदरी	"	२·००
शिशु-पालन	"	०·५०
मैं भूल नहीं सकता	(काटजू)	२·५०
कारावास-कहानी	(सु. नैयर)	१०·००
गांधी की कहानी	(फिशर)	४·००
भारत-विभाजन की कहानी		४·००
इंग्लैंड में गांधीजी		२·००
बा, बापू और भाई		०·५०
गांधी-विचार-दोहन		१·५०
सत्याग्रह-मीमांसा		३·५०
बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१·००
संत-सुधा-सार	"	११·००
अयोध्याकांड	"	१·००
नवीन यात्रा	(मनोज बसु)	२·००
भागवत-धर्म	(हरिभाऊ उपाध्याय)	५·५०

श्रेयार्थी जमनालालजी (ह. उ.)	६.५०
स्वतंत्रता की ओर "	४.००
बापू के आश्रम में "	१.००
मानवता के झरने (मावलंकर)	१.५०
बापू (घ० बिड़ला)	२.००
रूप और स्वरूप "	०.६२
डायरी के पन्ने "	१.००
ध्रुवोपाख्यान "	०.२५
स्त्री और पुरुष (टाल्स्टाय)	१.००
मेरी मुक्ति की कहानी "	१.५०
प्रेम में भगवान "	२.००
जीवन-साधना "	१.२५
कलवार की करतूत "	०.२५
हमारे जमाने की गुलामी "	०.७५
बुराई कैसे मिटे ? "	१.००
बालकों का विवेक "	०.५०
हम करें क्या ? "	३.५०
धर्म और सदाचार "	१.२५
अंधेरे में उजाला "	१.५०
ईसा की सिखावन "	१.००
कल्पवृक्ष (वा० अग्रवाल)	२.००
लोक-जीवन (कालेलकर)	३.५०
साहित्य और जीवन "	२.००
कब्ज (म० प्र० पोद्दार)	१.००
हिमालय की गोद में "	२.००
कहावतों की कहानियां "	२.००
राजनीति-प्रवेशिका	१.००
जीवन-संदेश (ख० जिब्रान)	१.२५
अशोक के फूल	३.००
जीवन-प्रभात	५.००
कांग्रेस का इतिहास (दो भाग)	२० ०
पंचदशी	१.५०
सप्तदशी	२.००
रीढ़ की हड्डी	१.५०
अमिट रेखाएं	३.००
नवप्रभात (नाटक)	१.००
कृषि-ज्ञान-कोष	४.००

प्रकाश की बातें	१.५०
धरती और आकाश	१.५०
ध्वनि की लहरें	१.५०
मेरी जीवन-यात्रा	२.००
एक आदर्श महिला	१.००
राष्ट्रीय गीत	०.२५
तमिल-वेद (तिरुवल्लुवर)	१.५०
थेरी-गाथाएं	१.५०
बुद्ध और बौद्ध-साधक	१.५०
जातक-कथा (आनंद कौ०)	२.५०
हमारे गांव की कहानी	१.५०
खादी द्वारा ग्राम-विकास	०.७५
साग-भाजी की खेती	३.००
ग्राम-सुधार	१.२५
पशुओं का इलाज	०.५०
चारादाना	०.२५
रामतीर्थ-संदेश (३ भाग)	१.१२
रोटी का सवाल (क्रोपा०)	३.००
नवयुवकों से दो बातें "	०.३७
पुरुषार्थ (डा० भगवानदास)	६.००
काश्मीर पर हमला	२.००
शिष्टाचार	०.५०
तट के बंधन	२.००
भारतीय संस्कृति	३ ५०
आधुनिक भारत	५.००
फलों की खेती	२.५०
दलहन की खेती	१.००
मैं तंदुरुस्त हूं या बीमार ?	०.५०
भा० नवजागरण का इतिहास	३.००
गांधीजी की छत्रछाया में १.५०,	२.५०
भागवत-कथा	३.५०
जय अमरनाथ	१.५०
लद्दाख-यात्रा की डायरी	२.५०
हमारी लोककथाएं	१.५०
पुण्य की जड़ हरी	१.५०
संस्कृत-साहित्य-सौरभ (२४ पुस्तकें) प्रत्येक	०.३७

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१ बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४ शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७ गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९ गौतम बुद्ध
१० सब सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३ ऐसे थे सरदार
१४ चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९ बाहुबली और नेमिनाथ
२० तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१ बीमारी कैसे दूर करें ?
२२ माटी की मूरत जागी
२३ गिरिधर की कुंडलियां
२४ रहीम के दोहे
२५ गीता-प्रवेशिका
२६ तुलसी-मानस-मोती
२७ दादू की वाणी
२८ नजीर की नज्में
२९ संत तुकाराम
३० हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९ गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३ पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५ संत ज्ञानेश्वर
४६ धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८ ईश्वर का मंदिर
४९ गांधीजी का संसार-प्रवेश
५० ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम
५२ कओं का मिलाप
५३ रामकृष्ण परमहंस
५४ समर्थ रामदास
५५ मीरा के पद
५६ मिल-जुलकर काम करो
५७ काला पानी
५८ पावभर आटा
५९ सवेरे की रोशनी
६० भगवान के प्यारे
६१ हारूं-अल-रशीद
६२ तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४ आकाश की बातें
६५ सच्चा तीर्थ
६६ हाजिर जवाबी
६७ सिंहासन बत्तीसी भाग १
६८ सिंहासन बत्तीसी भाग २
६९ नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७० मूरखराज
७१ नाना फडनवीस
७२ गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४ राजेन्द्र बाबू का बचपन
७५ परमहंस की कहानियां
७६ सोने का कंगन
७७ झांसी की रानी
७८ हुआ सवेरा
७९ बीरबल की बातें
८० मन के जीते जीत
८१ मुरब्बी
८२ हरिद्वार
८३ सागर की सैर
८४ आनबान के रखवाले
८५ महामना मालवीय
८६ भर्तृहरि
८७ देवताओं का प्यार
८८ देश यों आगे बढ़ेगा
८९ हमारे मुस्लिम संत

मूल्य प्रत्येक का सैंतीस नये पैसे

सैंतीस नये पैसे